Volume: 4 Issue: 1 Pages: 18-20

वैदिक साहित्य पर्यावरण के विशेष संदर्भ में

[*1] रवि कुमार मीना एंव

[*1] शोधार्थी - सहायक प्रोफेसर, संस्कृत साहित्य, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत। गाइड - डॉ. समय सिंह मीणा

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 15/Dec/2024
Accepted: 10/Jan/2025

***Corresponding Author**
रवि कुमार मीना
शोधार्थी - सहायक प्रोफेसर, संस्कृत साहित्य, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत।
गाइड - डॉ. समय सिंह मीणा

सारांश:
मनुष्य जाति का आदि ग्रंथ के रूप में वेदों को जाना जाता है। वेद शब्द का अर्थ ज्ञान या जानना होता है। वैदिक साहित्य में पर्यावरण व प्रकृति का संबंध ऋचाओं के माध्यम से बताया गया है ऋग्वेद में पर्यावरण से संबंधित अनेक सूक्तों की व्याख्या की गई है। अथर्ववेद में भूमि की क्रियाशीलता व विशिष्टता का वर्णन किया गया। आज का युग अर्थात् वैज्ञानिक युग प्रकृर्ति के रहस्य को बहुत बाद में जान पाया जबकि वैदिक साहित्य में उस रहस्य को पूर्व में ही बतलाया गया है। वैदिक साहित्य में प्रकृर्ति के साथ संबंध स्थापित करने की सीख दी गई है। वेदों मैं बतलाया गया है कि प्रकृर्ति के साथ संबंध नहीं स्थापित करने पर उसका दुष्परिणाम संपूर्ण मानव जाति के लिए हानिकारक हो सकता है। वेदों में प्रकृति के प्रति गहन श्रद्धा भाव और समर्पण भाव के अनुसार जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान की गई है। वेद पर्यावरण के प्रतीक चिन्ह के रूप में कार्य करते हैं।

मुख्य शब्द: आदि ग्रंथ, अथर्ववेद,वेद, ऋचा, सूक्त, प्रकृर्ति, श्रद्धा, समर्पण, पर्यावरण आदि।

प्रस्तावना:

वैदिक साहित्य के अंतर्गत चार वेदों की गणना की जाती है जिनमें ऋग्वेद यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद आते हैं। वेदो में सबसे प्राचीन वेद ऋग्वेद को माना गया है इसमें मंत्र व ऋचाओं का संग्रह है जो ईश्वर और प्रकृति की महत्ता को दर्शाते हैं। सामवेद में मंत्रों के माध्यम से संगीत शिक्षा प्रदान की गई है इसमें संगीत से संबंधित राग ताल आदि का वर्णन किया गया है। यजुर्वेद में यज्ञ समिधा कर्मकांड की शिक्षा प्रदान की गई है तथा बतलाया गया है कि हवन आदि से प्रकृति व पर्यावरण की शुद्धि होती है। अथर्ववेद के प्रथ्वी सूक्त में 63 मंत्रों के माध्यम से प्रकृति व पर्यावरण से संबंधित ज्ञान का समावेश किया गया। प्रथ्वी सूक्त में प्रकृति को विशिष्ट अवधि भूत तत्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है पृथ्वी सूक्त में पर्यावरण के जीव जगत के चर व अचर संबंधों का अद्वितीय ज्ञान मुखरित किया गया है । प्रथ्वी सूक्त के मंत्रों की वैज्ञानिकता वर्तमान समय में पर्यावरण के प्रति ज्यादा प्रासंगिक प्रतीत होती है पृथ्वी सूक्त राष्ट्रीय अवधारणा तथा वसुदेव कुटुंबकम् की भावना को विकसित के साथ-साथ पर्यावरण के प्रति स्नेहशील संबंध स्थापित करता है पर्यावरण की वास्तविक समर सता को पृथ्वी सूक्त में बताया गया है। प्रकर्ति व पर्यावरण की शुद्धि के लिए अग्नि को श्रेष्ठ माना गया है और ऋग्वेद में कहां गया है कि अग्नि मीले पुरोहितम् यज्ञस्य देव ऋत्विजम्।होतारम् रत्नघातमम्।। वेदो के अनुसार चलने पर पर्यावरण में असंतुलन की समस्या उत्पन्न नहीं हो सकती है तथा वेदो के निर्देश अनुसार न चलने पर पर्यावरण व मानव जीवन खतरे में पड़ सकता है। इसलिए वैदिक साहित्य में श्लोक और ऋचाओं के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का जिक्र किया गया है । वेदों में कई स्थानों पर पर्यावरण के महत्व को दर्शाया गया है। ऋग्वेद में अग्नि को पृथ्वी स्थानीय वायु को अन्तरिक्ष स्थानीय बताकर पर्यावरण को स्वच्छ विस्तृत संतुलित रखने का भाव व्यक्त किया है। वेदों में सूर्य को प्रकाश का तथा प्रथ्वी को जल तथा ओषधि का देवता माना गया है इन सबसे तात्पर्य है कि पर्यावरण तथा वेद एक दूसरे के पूरक के रूप में भाव प्रकट करते हैं।

वैदिक साहित्य में पर्यावरण

वेदों में पर्यावरण को स्पष्ट दर्शित किया गया है पर्यावरण एक व्यापक शब्द के रूप में आता है यह उन सभी स्थिति परिस्थितियों तथा वस्तु का योग है जो मनुष्य ही नहीं अपितु संपूर्ण जगत को चलाती है तथा जगत के क्रियाकलापो को अनुशासित करती है वैदिक साहित्य की बात करें तो पर्यावरण का कोई भी ऐसा पक्ष नहीं है जिसमें वेदो का दर्शन न हो भारतीय संस्कृति सनातन में पृथ्वी को माता का दर्जा दिया गया है अथर्ववेद वेद में कहां गया है माता भूमिःपुत्रो अहं पृथ्वियाःपृथ्वी हमारी मां हैं और हम पृथ्वी के पुत्र पृथ्वी संपूर्ण चराचर

जगत को पोषित करती है अतः इसकी सुरक्षा व देखभाल करना हमारा परम कर्तव्य है वैदिक विद्वानों ने समस्त संसार के लिए शांति की प्रार्थना की है। वेदो में समस्त हितकारक तत्वों को देवता कहकर उनके महत्व को बतलाया है साथ ही मानव जीवन में उनके पर्यावरणीय महत्व को स्वीकार किया गया है ।पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए वेदों में जिन देवताओं की महत्वपूर्ण भूमिका है उनमें वरुण अग्नि वायु सूर्य आदि हैं। ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में पृथ्वी तथा जलीय देवताओं से मंगल की कामना की गई है वेदों में प्राकृतिक तत्वों से मंगल की कामना को स्वस्ति कहा गया है इस प्रकार पर्यावरण को संरक्षित रखने की अनेक भावनाएं हमें अनेक जगह पर वैदिक साहित्य में देखने को मिलती है। ऋग्वेद में अग्नि को पिता के समान कल्याण करने वाला बताया गया है ऋग्वेद में प्रकृति व पर्यावरण का उल्लेख किया गया है इसमें पृथ्वी वायु जल और आकाश जैसे प्राकृतिक तत्वों का वर्णन भी किया गया है वेदों में उल्लिखित एक और महत्वपूर्ण बात है कि प्रकृति और मनुष्य एक दूसरे से गहरा संबंध रखते हैं ऋग्वेद में प्रकृति की चर्चा कई स्थानों पर की गई है प्रकृति को वेदों में देवी और माता के रूप में माना गया है वेदों में प्राकृतिक तत्वों के बारे में भी बताया गया है ऋग्वेद में प्रकृति के साथ गहरे संबंध को बताया गया है हमारे वैदिक साहित्य और प्रकृति एक दूसरे से गहन संबंध रखते हैं ऋग्वेद में दुख रोग और अन्य समस्याओं के लिए प्रकृति को जड़ से जड़ नहीं माना गया है उसे एक चेतन और सशक्त शक्ति के रूप में माना गया है जो हमारी सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहती है। ऋग्वेद में वृक्ष जल आकाश तथा प्राकृतिक तत्वों के महत्व को बताया गया है वृक्षों को अपने परिवार के सदस्य के रूप में बताया गया है जो हमें प्राण वायु प्रदान करते हैं ऋग्वेद में एक श्लोक के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण की बात कही गई है।

यत्किं च दृश्यते तत्सवम् जगदेकं देवेश्वरैः।
एतस्माद्विरजं विश्वं परितः पश्यते नरः।।

इस श्लोक में कहा गया है कि प्रकृति के समस्त तत्व देवताओं द्वारा निर्मित हुए हैं जिसे सभी मनुष्य देखते हैं श्लोक में विश्व का विराट स्वरूप बताया गया है इससे इस बात का संदेश प्रदान किया गया है कि प्रकृति अत्यंत महत्वपूर्ण है और सभी को ऐसे संरक्षित रखना चाहिए इस श्लोक के माध्यम से यह समझ सकते हैं कि वैदिक ऋषियों ने प्रकृति के संरक्षण के महत्व को समझा और इसे अपने धर्म का महत्वपूर्ण हिस्सा माना प्रकृति को देवताओं के रूप में यहां पर दिखाया गया है और इस बात का संदेश प्रदान किया गया है कि हमें प्रकृति का सम्मान करना चाहिए।
ऋग्वेद (1.23.248) में अप्सु अन्तःअमृतं, अप्सु भेषजं के रूप में जल को विशिष्ट बताया गया है अर्थात जल में अमृत है जल में औषधि गुण है ऋग्वेद में स्पष्ट व्यंजित किया गया है की वायु में जीवन दाहिनी शक्ति है इसलिए इसकी स्वच्छता पर्यावरण की अनुकूलता के लिए परम अपेक्षित है जल मानवता के लिए अमृत की तरह महत्वपूर्ण है जल में चिकित्सा की शक्ति है जल हमारे शरीर के लिए आवश्यक है इसे उपयोग में लाने से शरीर शुद्ध और स्वस्थ होता है। अथर्ववेद में प्रकृति के संरक्षण के लिए उपायो का वर्णन किया गया है इसमें वृक्षारोपण जल संचयन और अन्य प्राकृतिक उपायों के बारे में बताया गया है अथर्ववेद में प्रकृति के संरक्षण पर कहा गया है कि पृथ्वी के धारण करने से समुद्र की रज बह जाती है और समुद्र की रज पृथ्वी में विस्फोट का कारण बनती है।

ये वनस्पतयो वृक्षासो जेहि शून्येषु तदभ्ययाम्यहम्।
इमां दुहानो अनु यातु स्वस्ति नो वस्तु वेदा इन्द्रियेषु।।
(अथर्ववेद 12.1.52)

यह श्लोक वनस्पतियों और वृक्षों के महत्व को बतलाता है और उन्हें संरक्षित रखने की पहल करता है। वैदिक साहित्य में वनों का संरक्षण-पर्यावरण के संतुलन को बनाए रखने में वनों का महान योगदान एवं भूमिका स्वीकार करते हुए वैदिक ऋषियों ने बहुत चिंतन किया और वनों के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा गया है कि 10 कुओं के बराबर एक बाड़ी होती है 10 बावड़ियों के बराबर एक तालाब और 10 तालाब के बराबर एक पुत्र और 10 पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है-

दश कूप समा वापी,देशव्यापी समोहद्रः।
दशह्रद समः पुत्रे, दश पुत्रे समो द्रुमः।।

अतः हमें वृक्षों को संरक्षित करने के साथ-साथ अधिकाधिक वृक्ष रोपण करना चाहिए। वैदिक साहित्य में वायु संरक्षण-वैदिक साहित्य में शुद्ध वायु को जीवन की आधारशिला माना गया है ऋग्वेद में भेषज को विश्व अर्थात सबका चिकित्सक कहा गया है तथा यह कामना की गई है कि सभी जगह शुद्ध वायु प्रवाहित हो। आ बात वाहि भेषजं वि बात वाहि यद्रपः। त्वं हि विश्व भेषजो देवानां दूत ईयसे।। (ऋग्वेद) वायु को अशुद्धि से बचाने के लिए वैदिक काल में हवन विधि को अपनाया गया था वायु को शुद्ध एवं गुण कारी बनाने के लिए अणु भेदक शक्ति यज्ञ अग्नि में है वह कही नहीं है यज्ञ को वेदो में आकाश और पृथ्वी दोनों को पवित्र करने वाला बताया गया है।

वैदिक साहित्य में भूमि का संरक्षण

समस्त प्राणी जगत का आधार एवं आश्रय स्थल पृथ्वी ही है वेदो में भूमि को माता के समान वंदनीय माना गया है भूमि को और अधिक को अन्न देने वाला शस्य संपदा को धारण करने वाली मूल धातुओं की खान माना गया है अत इसे संरक्षित करना चाहिए अथर्ववेद में वर्णित है कि पृथ्वी के जिस भाग को खोदा गया हो उसे तुरंत भर देना चाहिए पृथ्वी के हृदय स्थल को कभी भी क्षति नहीं पहुंचानी चाहिए।

यत् थे भूमि विखनापि क्षिप्रं तदपि रोहतु।
मां ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्।
(अथर्ववेद)

वेदों में पर्यावरण प्रदूषण व उसके प्रभाव

पर्यावरण प्रदूषण का मुद्दा आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सबसे बड़ी समस्या बन कर आया है उसकी अवधारणा भले ही नहीं लगती हो किंतु यह प्रकृति के प्रारंभ से ही विद्यमान रहा है। वैदिक ऋषियों ने वस्तु या भाव के छह विकार बताए हैं जिनमें पर्यावरण से संदर्भ में अस्ति या सत्ता शब्द चिंतनीय हैं उसकी व्याख्या में विद्वान कहते हैं कि कोई वस्तु तभी अपनी सता को बनाएं रख सकती है जब वह स्वयं को धारण करने में समर्थ को जब उसमें भारी हस्तक्षेप होता है तो उसकी आत्म धारण शक्ति नष्ट हो जाती है यही कारण प्रदूषण का है इस प्रकार विष शब्द का उपयोग दूषण के रूप में किया जा गया है ऋग्वेद के प्रथम मंडल में सूक्त के मंत्र में विष शब्द का प्रयोग अनेकों बार किया गया है ऋषि अगस्त्य ने विष की आशंका युक्त होकर उसके निवारण के लिए इस सुक्त का प्रयोग किया है एक और शब्द पाप भी दूषण के पर्याय स्वरुप में अथर्ववेद में आया है यजुर्वेद के मंत्रों में अग्नि वायु सूर्य दिन रात सोते जागते हुए पाप एवं प्रदूषण से छूटने की कामना गई है । वैदिक साहित्य में प्रदूषण से होने वाली हानि के बारे में विस्तृत वर्णन किया गया है प्रदूषण के कारण अत्यधिक ताप बढ़ जाने से सूर्य आदि ग्रह उग्र हो जाते हैं और सूर्य की किरणें उग्र होकर स्थावर जंगल नदी तीनों लोकों को जलाने लगती है इस प्रकार यहां पर ग्लोबल वार्मिंग के उत्तम उदहारण देखने को मिलता है बह्मपुराण में प्रकृति प्रलय की संभावनाओं को

प्रदर्शित करते हुए शार्दुल मुनी ने पर्यावरण की रक्षा के लिए विश्व को सचेत करने का उपदेश दिया है और भौतिक पर्यावरण में इनकी रक्षा उपाय बताते हुए इनके स्थान को इस प्रकार से परिगणित किया है पृथ्वी मंडल, जल मंडल, तेज मंडल, वायुमंडल, आकाश मंडल, वस्तुतः इस बात में कोई भी दो मत नहीं है कि वैदिक साहित्य ने पर्यावरण से जुड़े हुए समस्त पहलू पर बहुत ही सजीव ढंग से प्रकाश डाला है उपरोक्त तथ्यों से है स्पष्ट हो जाता है कि हमारे विद्वानों ने भारतीय जन मानस को कैसे पर्यावरण का पाठ पढ़ाया और उसकी प्रति संवेदनशील रहने के लिए प्रेरित करते हैं

उपसंहार

आज देश पर्यावरण से दूषित हो रहा है उससे कर्म में असंतुलन उपस्थित हो गया है इससे बचने के लिए वेद प्रतिपादित सात्विक भाव को अपनाना पड़ेगा पर्यावरण को स्वच्छ सुंदर रखने का आग्रह सिर्फ भावनात्मक स्तर पर किया गया हो ऐसी बात नहीं है वैज्ञानिक अनुसंधान सन्दर्भ में भी सात्विक भाव से अनुप्राणित होकर गहरे मानवीय संबंधों की स्थापना पर पर्याप्त बल दिया गया है वेदो का स्पष्ट निर्देश है कि लोग प्रकृति के प्रति सदा पूर्ण श्रद्धा भाव रखें और आनंद में जीवन व्यतीत करने के लिए उससे पर्यावरण की अनुकूलता प्राप्त करते रहें शुक्ल यजुर्वेद में स्पष्ट संदेश दिया गया है पवन मधुर सरस शुद्ध तथा गतिशील रहे सागर मधुर वषर्ण करें ओज प्रदान करने अन्न आदि वस्तुओं के बाद मधु के समान सुकोमल वन जाएं रात के साथ दिन भी मधुर रहे पृथ्वी की धूल से लेकर अंतरिक्ष सब कुछ मधुर हो न केवल जीवित मनुष्यो का अपितु पितरों का जीवन मधुमह में रहे सूर्य मधु में रहेगा गाय मधुर दूध देने वाली हो निखिल ब्रहमांड मधु में रहे प्रकृति के संरक्षण सजीवता एकता और प्रेम के महत्व को समझने के लिए हमेशा वेदऔर पर्यावरण एक दूसरे के पूरक बने रहे।

सन्दर्भ सूची:

1. यह पद ऋग्वेद के प्रथम मंडल, प्रथम सूक्त, प्रथम मंत्र से लिया गया है।
2. शुक्ल यजुर्वेद 36/17
3. ऋग्वेद 10/137/3
4. वाजपेयी दीप्ति, संस्कृत साहित्य में पर्यावरण शिक्षा, मुहिम प्रकाशन दिल्ली 2016 पृ-16
5. अथर्ववेद-12/1/35
6. यजुर्वेद 13/18
7. अथर्ववेद 10/1/10
8. यजुर्वेद 20/14 से 16
9. ब्रह्मपुराण 232/14,-19 गीता प्रेस गोरखपुर।
10. वही पृष्ठ-116
11. महाभारत भीष्म पर्व 77/11